MESSAGE FROM RAJYA SABHA

SECRETARY: Sir, I have to report the following message received from the Secretary-General of Rajya Sabha:—

"In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha, at its sitting held on the 10th December, 1980, agreed without any amendment to the Public Premises (Eviction of Unauthorised Occupants) Amendment Bill, 1980, which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 4th December, 1980."

ASSENT TO BILLS

SECRETARY: Sir, I lay on the Table following two Bills passed by the Houses of Parliament during the current session and assented to since a report was last made to the House on the 5th December, 1980:—

1. The Hotel-Receipts Tax Bill, 1980.

2. The High Court and Supreme Court Judges (Conditions of Service) Amendment Bill, 1980.

ESTIMATES COMMITTEE

Fourth Report

SHRI S. B. P. PATTABHI RAMA RAO (Rajahmundry): I beg to present the Fourth Report (Hindi and English versions) of the Estimates Committee on Action Taken by Goverment on the recommendations contained in the Thirty-sixth Report of the Estimates Committee (Sixth Lok Sabha) on the Ministry of Works and Housing—DDA—Demolitions in Unauthorised Colonies.

COMMITTEE ON PAPERS LAID ON THE TABLE

Second Report

DR. RAJENDRA KUMARI BAJPAI (Sitapur): I beg to present the Second Report (Hindi and English versions) of the Committee on Papers laid on the Table.

12.23 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported threat by major Airlines to boycott the Delhi Airport

SHRI RASHID MASOOD (Saharanpur): I call the attention of the Minister of Tourism and Civil Aviation to the following matter of urgent public importance and request that he may make a statement thereon:—

"Reported threat by the major Airlines to boycott the Delhi Airport because of poor facilities at the airport."

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (SHRI A. P. SHARMA): Government have not received any threat from any of the airline to stop using Delhi airport because of the poor facilities at the airport. However, the international arrival hall at the Delhi airport is being extended on the air side in two phases to provide additional space for passenger handling. Since the work is in progress only two out of the four conveyer belts are in use at present and consequently, some inconvience is being felt by the international arriving passengers. Airlines operating at Delhi airport are aware that the work is in progress and have accepted the temporary inconvenience to the passengers. The situation will improve considerably when the first phase is completed by the end of December, 1980 and the second phase

is completed by March, 1981. When this work is completed all the four conveyer belts of lengths greater than the present ones will be in operation for quick baggage clearance.

Owing to the construction being in progress, and only two out of the four conveyer belts being in operation the trolleys bringing in baggage from the aircraft to the arrival hall have restricted space for movement which results in delays in the arrival of baggage in the customs hall. As customs clearance can be made only after the baggage arrives, delay is being experienced especially at peak hours during night when bunching of flights take place due to delayed arrivals. Earlier there were some difficulties due to inadequate air conditioning facilities but the problem of airconditioning has been resolved and this inconvenience has since been removed.

श्री रशीद मसूद: जनाब स्पीकर साहब, अभी जो हमारे मुहतरम वजीर साहब ने अपना ब्यान दिया है, इससे ऐसा अन्दाजा होता है कि शायद कंस्ट्रक्शन के काम की वजह से ये तमाम परेशानियां और दिक्कतें पेसेन्जर्स को हो रही हैं, जिसकी वजह से कुछ एयर लाइन्स ने इस एयरपोर्ट का बायकाट करने का थ्रैट किया है । हालांकि मिनिस्टर साहब ने इससे इन्कार किया है, लेकिन यह अखबारों में आया है । 24 अक्तूबर, के हिन्दुस्तान टाइम्स में यह छपा है कि कुछ एयरलाइन्स ने थ्रैट किया है कि दिल्ली एयरपोर्ट का बायकाट करेंगे । हम समझते हैं कि यह हो सकता है क्योंकि कुछ एयरलाइन्स मद्रास के एयरपोर्ट का बायकाट कर चुकी हैं क्योंकि वहां भी बहुत पूअर फैसिलिटीज थीं ।

अब जैसा कि मंत्री जी ने फरमाया है कि वहां परेशानियां नहीं हैं, मैं समझता हूं कि जो जवाब मिनिस्ट्री से आया होगा, एयरपोर्ट अथारिटीज के पास से आया होगा, वही वैसा ही उन्होंने यहां पढ़ दिया है, इसकी कोई इन्क्वायरी नहीं की है ।

आज की मेरी इत्तिला यह है कि एराइवल लॉज में पेसेन्जर्स को बड़ी परेशानियां होती हैं, क्योंकि हमारा यह तजुर्बा है कि पिछले साल जब शराब बन्द करने की बात कही गई थी तो यही कहा गया था कि हमारा कंपीटीशन और एयरलाइन्स से है, इसलिये हम यहां शराब बन्द नहीं कर सकते हैं ।

12.27 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

मैं समझता हूं कि पेसेन्जर्स को ज्यादा फैसिलिटीज देने में हमें सहूलियत देनी चाहिये क्योंकि फैसिलिटीज के बारे में भी हमारा कंपीटीशन है, चूंकि हम ज्यादा फैसिलिटीज नहीं दे रहे हैं । 25 अक्तूबर के हिन्दुस्तान टाइम्स में यह भी आया है कि कुछ लोग दिल्ली के एयरपोर्ट पर उतरे, वे 18 साल के बाद दिल्ली आये थे, उन्होंने एयर पोर्ट की तकलीफों को देखकर यह फैसला किया कि बजाय हम हिन्दुस्तान में आये हमें वापिस चले जाना चाहिए क्योंकि दिल्ली के एयरपोर्ट पर, जहां पर कि सबसे ज्यादा फैसिलिटीज होती हैं, वहां का यह हाल है ।

जब बाहर से मुसाफिर आते हैं तो उन्हें इमीग्रेशन और हैल्थ के सिलसिले में इतनी ज्यादा परेशानियां होती हैं कि 4, 4 और 5, 5 घंटे उन्हें वहां लग जाते हैं । हमारे यहां एक हफ्ते में 143 फ्लाइट्स हैं और काफी फ्लाइट्स एक वक्त में ही रात को आमतौर पर आती हैं जिनकी वजह से बहुत सारे पेसेन्जर्स हो जाते हैं । इसमें हमारे मुहतरम वजीर साहब को जरूर सोचना चाहिये और वहां पर ज्यादा आदमी बढ़ा देने चाहियें ताकि क्लीयरेन्स में इतनी देर न लगे । मैं समझता हूं कि अभी तक यह नहीं हुआ है । मेरी दरख्वास्त है कि आप इस सिलसिले में कुछ कार्यवाही करें । वहां पर एक इमीग्रेशन बिल भरना पड़ता है ।

जो लोग सामान लाते हैं, उसके बारे में यह मामला एस्टीमेट्स कमेटी को दिया गया था, और उसने मिनिस्ट्री से रिपोर्ट मांगी थी । उस रिपोर्ट में कहा गया था कि हम उसको कुछ आसान बना रहे हैं। पिछले दिनों रूल्स में कुछ चेन्जेज हुए हैं, लेकिन आपका जो बिल आफ एन्ट्री है, उसकी 19 स्टेजों से गुजरना पड़ता है, जिससे बेइन्तहा और जबर्दस्त परेशानियां और तकलीफें होती हैं । आपने बयान में

[श्री रशीद मसूद]

कहा है कि क्लीयरेंस और कम्पैन्सेशन देने में कोई दिक्कत नहीं होती । इसका मुझे जाती तजुर्बा है, पिछले दिनों मेरे दो भाई बाहर से आये और इत्तिफाक से दोनों भाइयों का सामान गायब हो गया । एक भाई के सामान का 3, 4 महीने की दौड़-धूप के बाद 1500 रुपये कंपैन्सेशन मिला और दूसरे को कोई कम्पैन्सेशन ही नहीं मिला एक भाई को 3, 4 महीने के बाद इत्तिला दी गई कि आपका सामान मिल गया है। वह यहां आये और डेढ़ हफ्ते उनको यहां रुकना पड़ा । कभी इस दफ्तर में और कभी उस दफ्तर में घूमना पड़ा । 12 दिन में उनका सामान मिला । जब उनको नोटिस दे दिया गया था कि आपका सामान मिल गया है तो फिर ऐसी परेशानियां नहीं होनी चाहियें थी । जब तक आप इन परेशानियों और दिक्कतों को दूर नहीं करेंगे, अगर उन्होंने थ्रैट नहीं भी दिया है तो वह सिर्फ थ्रैट ही नहीं करेंगे, बल्कि बायकाट करेंगे, आयेंगे नहीं।

इंटरनेशनल एयर ट्रैवल्स एसोसियेशन की रिपोर्ट मैंने पढ़ी है, उसने यहां की एयरपोर्ट फैसिलिटीज को दुनियां की दूसरी जगहों की फैसिलिटीज के मुकाबले सबसे कम बताया है । इसलिए मंत्री महोदय इसको मामूली बात न समझें बल्कि इसको सीरियसली लेकर इन सारी दिक्कतों को दूर करने की कोशिश करें । बताया गया है कि उसमें इम्प्रूवमेन्ट हो गया है। इम्प्रूवमेन्ट तब हो गया है, जब कि पैसे की जरूरत नहीं है । इम्प्रूवमेन्ट तब होना चाहिए, जबकि जरूरत हो । मैं खुद कई दफा गया हूं, एराइवल लौंज में पानी का कोई इन्तजाम नहीं है । टायलेट्स हैल्थ एंड इम्मीग्रेशन में बनाये गये हैं । अगर कोई मुसाफिर कस्टम्ज में आ जाता है, तो उसे फिर वहीं वापस जाना पड़ता है । ऐसा नहीं हो सकता है कि किसी आदमी को कस्टम्ज में टायलेट में जाने की जरूरत न पड़े, क्योंकि कस्टम्ज में आठ नौ घंटे लग जाते हैं । इधर कस्टम्ज का डर भी रहता है । अगर कोई बेचारा इन्नोसेंट मुसाफिर है, तो कस्टम्ज आफिसर सामान देख कर कहते हैं कि यह क्या है, वह क्या है । अगर किसी के पास सिग्रेट है, तो कहते हैं कि एक पैकट हमें दे दीजिए । अगर किसी के पास तीन ट्रांसिस्टर हैं हालांकि उन्हें तीन छोटे छोटे बच्चे ले कर आये हैं, तो कहते हैं कि आप तीन ट्रांसिस्टर क्या करेंगे, यह ट्रांसिस्टर तो हमारे बच्चे के लिए भी ठीक रहेगा । और नहीं देंगे, तो तरह-तरह के ऐतराज लगा देंगे । ट्रांसफर आफ रेजिडेंस के लिए अमूमन क्लीयर कर दिया जाता है, लेकिन उसके लिए भी परेशानी खड़ी कर दी जाती है । आदमी एक जगह से दूसरी जगह भागा भागा फिरता है ।

जो लोग पैसेंजर्ज को रिसीव करने के लिए जाते हैं, रिसेप्शन में दो तीन साल पहले उनके लिए चाय काफी वाले रहते थे। लेकिन पिछले दिनों से वहां पर कोई चीज नहीं मिलती है । मैं खुद वहां पर गया हूं । एक बार मैं वी आई पी लौंज में नहीं गया, बल्कि जहां पब्लिक बैठती है, वहां पर गया । वहां पर चाय काफी का कोई इन्तजाम नहीं है । आदमी नीचे उतर कर जाये और चाय काफी पीये ।

इन सब बातों को नजर-अंदाज नहीं करना चाहिए, क्योंकि जैसा कि मिनिस्टर साहब ने खुद कहा है, हमें इन्टरनेशनल कम्पीटीशन का मुकाबला करना है । मैं यह भी जानना चाहता हूं कि एयर-कन्डीशनिंग के बारे में जो 525 टन का प्राजेक्ट था, उसका क्या हुआ, वह कब तक शुरू हो जायेगा । पालम पर दूसरा टर्मिनल बनने तक बहुत देर हो जायेगी ।

मिनिस्टर साहब ने खुद माना है कि एराइवल लौंज में स्पेस बहुत कम है । उन्होंने कनवेयर बेल्ट की खराबी का जिक्र भी किया है । वहां पर ट्रालीज नहीं मिलती हैं और आदमी को दस बारह चक्कर लगा कर सामान को उठा कर बाहर लाना पड़ता है । पिछले साल एस्टीमेट्स कमेटी ने इस बारे में रीकमेंडेशन की थी । मोहतरिम वजीर साहब ने वादा किया था कि हम इसको देखेंगे । मैं समझता हूं कि अब स्पेशल किस्म की ट्रालीज बनवाने की दिक्कतें दूर हो गई होंगी । अगर वे बन गई हैं, तो उन्हें एयरपोर्ट पर लाया जाये, ताकि लोग उनसे फायदा उठा सकें।

تھی تو یہ بھی کہا گیا تھا کہ ہمارا کمپیٹیشن اور ایرلائنز سے ہے - اس لئے ہم یہاں شراب بند نہیں کر سکتے ہیں -

میں سمجھتا ہوں کہ پیسنجرز کو زیادہ فیسیلٹیز دینے میں ہمیں سہولیت دینی چاہیئے کیونکہ فیسلیٹیز کے بارے میں ہی ہمارا کومپیٹیشن ہے چونکہ ہم زیادہ فیسیلیٹز نہیں دے رہے ہیں - ۲۵ اکتوبر کے ہندوستان ٹائمز میں یہ بھی آیا ہے کہ کچھ لوگ دلی کے ایرپورٹ پر اترے وہ اٹھارہ سال کے بعد دلی آئے تھے انہوں نے ایرپورٹ کی تکلیفوں کو دیکھ کر یہ فیصلہ کیا کہ بجائے ہم ہندوستان میں آئیں ہمیں واپس چلا جانا چاہیئے کیونکہ دلی کے ایرپورٹ پر جہاں پر کہ سب سے زیادہ فیسلیٹیز ہوتی ہیں وہاں کا یہ حال ہے -

جب باہر سے مسافر آتے ہیں تو انہیں امیگریشن اور هیلتھ کے سلسلہ میں اتنی زیادہ پریشانیاں ہوتی ہیں کہ چار چار اور پانچ پانچ گھنٹے انہیں وہاں لگ جاتے ہیں - ہمارے یہاں ایک ہفتہ میں ۱۴۳ فلائٹس ہیں اور کافی فلائٹس ایک وقت میں ہی رات کو عام طور پر آتی ہیں جسکی وجہ سے بہت سارے پیسنجرز سو

[شری رشید مسعود (سہارنپور) :

جناب اسپیکر صاحب - ابھی جو ہمارے محترم وزیر صاحب نے جو اپنا بیان دیا ہے اس سے ایسا اندازہ ہوتا ہے کہ شاید کنسٹرکشن کے کام کی وجہ سے یہ تمام پریشانیاں اور دقتیں پیسنجرس کو ہو رہی ہیں جسکی وجہ سے کچھ ایرلائنز نے اس ایرپورٹ کا بائیکاٹ کرنے کا تہریت کیا ہے - حالانکہ منسٹر صاحب نے اس سے انکار کیا ہے لیکن یہ اخباروں میں آیا ہے - ۲۴ اکتوبر کے ہندوستان ٹائمز میں یہ چھپا ہے کہ کچھ ایرلائنز نے تہریت کیا ہے کہ دلی ایرپورٹ کا بائیکاٹ کرینگے - ہم سمجھتے ہیں کہ یہ ہو سکتا ہے کیونکہ کچھ ایرلائنز مدراس کے ایرپورٹ کا بائیکاٹ کر چکی ہیں کیونکہ وہاں بھی بہت پوئر فیسلیٹز تھیں-

اب جیسا کہ منتری جی نے فرمایا ہے کہ وہاں پریشانیاں نہیں ہیں میں سمجھتا ہوں کہ جو جواب منسٹری سے آیا ہوگا ایرپورٹ اتھارٹیز کے پاس سے آیا ہوگا - وہی ویسا ہی انہوں نے یہاں پڑھ دیا ہے اسکی کوئی انکوئری نہیں کی ہے-

آج کی میری اطلاع یہ ہے کہ ارائول لانج میں پیسنجرز کو بڑی پریشانیاں ہوتی ہیں کیونکہ ہمارا یہ تجربہ ہے کہ پچھلے سال جب شراب بند کرنے کی بات کہی گئی

کمپلسیشن ھی نہیں ملا - ایک ہوئی کو تین چار مہینے کے بعد اطلاع دی گئی کہ آپکا سامان مل گیا ھے - وہ یہاں آئے اور تیرھہ ھفتہ انکو یہاں رکنا پڑا - کبھی اس دفتر میں اور کبھی اس دفتر میں گھومنا پڑا - بارہ دن میں ان کا سامان ملا - جب انکو نوٹس دے دیا گیا تھا کہ آپکا سامان مل گیا ھے تو پھر ایسی پریشانیاں نہیں ھونی چاھیئے تھیں - جب تک آپ ان پریشانیوں اور دقتوں کو دور نہیں کرینگے اگر انہوں نے تھریٹ نہیں بھی دیا ھے تو صرف تھریٹ ھی نہیں کرینگے بلکہ بائیکاٹ کرنیگے آئیں گے نہیں -

انٹرنیشنل ایرٹریولز ایسوسی ایشن کی رپورٹ میں نے پڑھی تھی اس نے یہاں کی ایرپورٹ فیسیلٹیز کو دنیا کی دوسری جگہوں کی فیسلٹیز کے مقابلہ سب سے کم بتایا ھے - اس لئے منسٹری مہودیہ اسکو معمولی بات نہ سمجھیں بلکہ اس کو سیریسلی لیکر ان ساری دقتوں کو دور کرنیکی کوشش کریں - بتایا گیا ھے کہ اس میں امپرومنٹ ھو گیا ھے - امپرومنٹ تب ھو گیا ھے جب کہ پلکھے کی ضرورت نہیں ھے - امپرومنٹ تب ھونا چاھیئے جبکہ ضرورت ھو - میں خود کئی دفعہ گیا ھوں - ارائول

[شری رشید مسعود]

جاتے ھیں - اس میں ھمارے محترم وزیر صاحب کو ضرور سوچنا چاھیئے اور وھاں پر زیادہ آدمی بٹھا دینے چاھیئیں تاکہ کلیرنس میں اتنی دیر نہ لگے - میں سمجھتا ھوں کہ ابھی تک یہ نہیں ھوا ھے - میری درخواست ھے کہ آپ اس سلسلہ میں کچھ کاروائی کریں - وھاں پر ایک امیگریشن بل بھرنا پڑتا ھے -

جو لوگ سامان لاتے ھیں اس کے بارے میں یہ معاملہ اسٹیمیٹس کمیٹی کو دیا گیا تھا اور اس نے منسٹری سے رپورٹ مانگی تھی اس رپورٹ میں کہا گیا تھا کہ ھم اسکو کچھ آسان بنا رھے ھیں پچھلے دنوں رولز میں کچھ چینجز ھوئی ھیں لیکن آپکا جو بل آف ایلنٹری ھے اسکی ۱۹ اسٹیجوں سے گزرنا پڑتا ھے جس سے بے پناہ اور زبردست پریشانیاں اور تکلیفیں ھوتی ھیں - آپ نے یہاں میں کہا ھے کہ کلیرنس اور کمپاشیشن دینے میں زیادہ کوئی دقت نہیں ھوتی - اسکا مجھے ذاتی تجربہ ھے پچھلے دنوں میرے دو بھائی باھر سے آئے اور اتفاق سے دونوں بھائیوں کا سامان غائب ھو گیا - ایک بھائی کو سامان کا تین چار مہینے کی دوڑ دھوپ کے بعد ۱۵۰۰ روپے کمپنسیشن ملا اور دوسرے کو کوئی

لانج میں پانی کا کوئی انتظام نہیں ہے - تائلٹس ہیلتھ اینڈ امیگریشن میں بنائے گئے ہیں - اگر کوئی مسافر کسٹمز میں آ جاتا ہے تو پھر اسے وہیں واپس جانا پڑتا ہے ایسا نہیں ہو سکتا ہے کہ کسی آدمی کو کسٹمز میں تائلٹ میں جانے کی ضرورت نہ پڑے کیونکہ کسٹمز میں آٹھ نو گھنٹے لگ جاتے ہیں - ادھر کسٹمز کا ڈر بھی رہتا ہے - اگر کوئی بیچارہ انموسیلٹ مسافر ہے تو کسٹمز افیسرز سامان دیکھ کر کہتا ہے کہ یہ کیا ہے وہ کیا ہے - اگر کسی کے پاس سگریٹ ہیں تو کہتے ہیں کہ ایک پیکٹ ہمیں دے دیجئے - اگر کسی کے پاس تین ٹرانسسٹر ہیں حالانکہ انہیں تین چھوٹے بچے لیکر آئے ہیں تو کہتے ہیں کہ آپ تین ٹرانسسٹر کیا دیں گے یہ ٹرانسسٹر تو ہمارے بچے کے لئے بھی ٹھیک رہیگا - اگر نہیں دینگے تو طرح طرح کے اعتراض لگا دینگے - ٹرانسفر آف ریزیڈینس کے لئے عموماً کلیر کر دیا جاتا ہے لیکن اس کے لئے بھی پریشانی کھڑی کر دی جاتی ہے - آدمی ایک جگہ سے دوسری جگہ بھاگا پھرتا ہے -

جو لوگ پیسنجرز کو ریسیو کرنے کے لئے آتے ہیں - ریسپشن میں دو تین سال پہلے چائے کافی والے رہتے تھے لیکن پچھلے دنوں سے وہاں پر کوئی چیز نہیں ملتی ہے - میں خود وہاں پر گیا ہوں - ایک بار میں وی - آئی - پی - لانج میں نہیں گیا بلکہ جہاں پبلک بیٹھتی ہے وہاں پر گیا - وہاں پر چائے کافی کا کوئی انتظام نہیں ہے - آدمی نیچے اتر کر جائے اور چائے کافی پیئے -

ان سب باتوں کو نظر انداز نہیں کرنا چاہیئے کیونکہ جیسا کہ منسٹر صاحب نے خود کہا ہے ہمیں انٹرنیشنل کمپیٹیشن کا مقابلہ کرنا ہے - میں یہ بھی جاننا چاہتا ہوں کہ ایرکنڈیشننگ کے بارے میں جو ۵۲۵ ٹن پراجیکٹ تھا اسکا کیا ہوا - وہ کب تک شروع ہو جائیگا -

منسٹر صاحب نے خود مانا ہے کہ اول تو لانج میں اسپیس کم بہت کم ہے - انہوں نے کنویر بیلٹ کی خرابی کا ذکر بھی کیا ہے - وہاں پر ٹرالیز نہیں ملتی ہیں - اور آدمی کو دس بار چکر لگا کر سامان کو اٹھا کر باہر لانا پڑتا ہے -

پچھلے سال اسٹیمیٹس کمیٹی نے اس بارے میں رکمنڈیشن کی تھی - محترم وزیر صاحب نے جو وعدہ کیا تھا کہ ہم اسکو دیکھیں گے - میں سمجھتا ہوں کہ اب اسپیشل قسم کی ٹرالیز بنوانے کی دقتیں دور ہو گئی ہونگی - اگر وہ بن گئی ہیں تو انہیں ایرپورٹ پر لایا جائے تاکہ لوگ ان سے فائدہ اٹھا سکیں -]

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा : उपाध्यक्ष महोदय, अभी माननीय सदस्य ने जो फरमाया है, उसके मुताल्लिक मैंने पहले ही अर्ज किया है कि इस वक्त लोगों को कुछ कठिनाई हो रही है। मैंने कारण भी बताये हैं कि क्यों कठिनाई हो रही है।

[श्री अनन्त प्रसाद शर्मा]

एयरपोर्ट में कुछ एक्सपेंशन का काम चल रहा है । फिलहाल लौंज मे 350 आदमियों के लिए जगह है । जब हमारी एक्सपेंशन पूरी हो जायेगी, तो फिलहाल 525 आदमियों के लिए जगह बन जायेगी । यह इन्तजाम हो रहा है ।

माननीय सदस्य ने बहुत सी बातें कही हैं । लेकिन अभी जो तकलीफें हैं, वे तभी दूर हो सकती हैं, जब हम दिल्ली के लिए एक अलग इन्टरनेशनल एयरपोर्ट बना लेंगे माननीय सदस्यों को यह जान कर खुशी होगी कि सरकार ने हाल में अगस्त में एक प्राजेक्ट सैंक्शन किया है। उसका डिजाइन बन सैंक्शन किया है । उसका डिजाइन बन चुका है और आगे कार्यवाही की जा रही है। उस प्राजेक्ट पर करीब करीब 64 करोड़ रुपया खर्च होगा जब वह तैयार हो जायेगा, तो माननीय सदस्य देखेंगे कि हमारे मुल्क में एयरपोर्ट से कुछ कम नहीं है । सुविधाए भी वहां पर हर तरह की होंगी । उस में भी वहां पर हर तरह की होंगी। उस में चुकी है लेकिन बाजाब्ता काम वहां पर अभी शुरू इसलिए नहीं हुआ है कि जो एयरोब्रिज इस तरह का इंटरनेशनल एयर पोर्ट बन चुका है । वहां पर काम की शुरूआत हो च्जुकी है लेकिन बाजाब्ता काम वहां पर अभी शुरू इसलिए नहीं हुआ कि जो एयरोब्रिज है वह अभी नहीं आई है । वह आते ही अगले एक महीने या 6 हफ्ते के अन्दर सारी जो वहां की सुविधाएं हैं वह उपलब्ध हो जायंगी । मैं माननीय सदस्य से गुजारिश करूंगा कि जो बम्बई का इंटरनेशनल एयर पोर्ट बना है उस को जा कर वह देखें, उन्हें मालूम पड़ेगा कि किसी भी दूसरे मुल्क के इंटरनेशनल एयर पोर्ट से वह किसी माने में भी कम नहीं है ।

श्री सतीश अग्रवाल (जयपुर) : इतने लोगों को आप जापान ले गए, इन को कम से कम बम्बई ले जाइए ।

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा : आप तो थे नहीं उस कमेटी में । आप की पार्टी के लीडर लोग गए थे मेरे साथ । मजबूरी थी कि कमेटी के लोगों को ही ले जा सकते थे । अगर आप उसमें होते तो आपको भी ले जाने में मुझे बड़ी खुशी होती ।

उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने और कुछ बातें कही हैं जिन के बारे में हम लोगों को बहुत हद तक रिपोर्ट भी मिलती है जैसे कस्टम के कारण लोगों को कुछ परेशानी होती है या और कोई दिक्कतें होती हैं, इमीग्रेशन वगैरह में, ये सारी दिक्कतें हमें मालूम हैं और जब ये चीजें हमारे सामने आती हैं तो हम इसके उपर ख्याल करते हैं, इन को देखते हैं और इन को दूर करने की कोशिश करते हैं।

माननीय सदस्य को मालूम होगा कि एयर पोर्ट के अंदर अलग अलग चैनल बने हुए हैं। जिन लोगों को कुछ डिक्लेयर नहीं करना है वे उस चैनल से जाते हैं । आम तौर से वहां कोई रोकथाम नहीं होती है । सिर्फ उन को लिखना होता है कि नथिंग टू डिक्लेयर, और फिर वे उस चैनल से चले जाते हैं । लेकिन अगर किसी पर शक होता है या इस तरह की रिपोर्ट होती है या पहले से किसी के बारे में कुछ मालूम होता है तो वहां भी कुछ रोकथाम की जाती है । ऐसा नहीं है कि हर कोई आए और चला जाय, ऐसी बात नहीं है । लेकिन आम तौर से ये सुविधाएं वहां हैं ।

जहां तक माननीय सदस्य ने अपने तजुर्बे की बात बतलायी, मुझे अफसोस है कि इन के जो भाई यहां पर आए थे, वे जब आए तो उनका सामान गुम हो गया था और उनको काफी परेशानी हुई । अगर हम लोगों की नोटिस में आया होता तो शायद उस परेशानी को दूर कर सकते और वह परेशानी नहीं होती । बहरहाल, मैं यह आश्वासन देना चाहता हूं कि इस तरह की परेशानी अगर होती है तो उस को हम ठीक करने की कोशिश करते हैं और जब कभी भी इस तरह की चीजें हमारी नोटिस में आएंगी तो हम इस को ठीक करने की कोशिश करेंगे ।

श्री रशीद मसूद : जो एस्टीमेट्स कमेटी की रेकमेंडेशन थी उस में क्या किया यह बता दीजिए ।

شری رشید مسعود - جو اسٹینڈنگ کمیٹی کی رکمنڈیشن تھی اس میں کیا کیا ہے بتا دیجئے -]

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा : जहां तक एयर पोर्ट पर सुविधाओं का सवाल है मैंने जैसा कहा कि इन सारी सुविधाओं के लिए तो कमेटी भी है, हम उस की देखभाल भी करते हैं और समय-समय पर उस के ऊपर ख्याल भी करते हैं, उस के बाद उस में जो जरूरत होती है उस को हम करते हैं। लेकिन जहां तक आप ने एक खास कमेटी की रेकमेंडेशंस की बात की वह इस वक्त मेरे सामने नहीं है। मैं उस को देखूंगा और इस बात को भी देखूंगा कि जो कमेटी ने रेकमेंडेशन की है उस को लागू किया जाय।

श्री राजेश कुमार सिंह (फिरोजाबाद) : माननीय मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया है उस के सम्बन्ध में ही मैं प्रश्न करना चाहूंगा। उन्होंने कहा है कि किसी मेजर एयर लाइन्स की कोई शिकायत नहीं है, तो मैं उन का ध्यान खास तौर से इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल मिस्टर न्ट्स हैमरजोल्ड के बयान की तरफ दिलाऊंगा जिस में उन्होंने साफ शब्दों में कहा है;

"Indian airport suffers from serious problems in flow of the passengers and cargo."

इसके साथ साथ जो तत्कालीन मंत्री थे सिविल एविएशन और टूरिज्म के उन्होंने भी स्वीकार किया है कि हमारे यहां जहां तक जगह की सुविधा का या कस्टम वाली बात का सवाल है इन सारी चीजों में दिक्कतें हैं। इसके साथ साथ श्री एस. रामनाथन ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है। मेरा ख्याल है कि माननीय मंत्री जी को इस की जानकारी है और जैसा माननीय सदस्य रशीद मसूद साहब ने कहा कि कभी ऐसा वक्त भी आ सकता है कि आज तो उन्होंने धमकी नहीं दी लेकिन कल वह यहां से बाइ-पास कर जाएंगे। खास तौर से मैं यह कहना चाहूंगा जैसा माननीय मंत्री जी ने कहा कि बम्बई के इंटरनेशनल एयर पोर्ट को देखने के बाद उन्हें शायद हीथ्रो को भी भूल जाना पड़ेगा, मैं यह कहना चाहूंगा कि 1985 में जा कर आप का दिल्ली वाला इंटरनेशनल एयर पोर्ट तैयार होगा। 64 करोड़ रुपये आप ने खर्च कर दिए। 85 में जा कर वह बनेगा, उसके बीच में आप क्या सुविधाएं लोगों को दे रहे हैं। यह तो उसके बाद की बात है कि गंगा जी आएंगी तो उद्धार हो जायगा। गंगा जी बनेंगी, आएंगी, भागीरथ उस को लाएंगे उसके बाद उद्धार होगा। वास्तविकता कुछ नहीं है उसमें। मेरे कहने का अर्थ यह है कि इन्होंने ग्रीन और रेड सिगनल चैनल की बात कही। मेरा खयाल है कि इमीग्रेशन एथारिटी के पास तीन घंटे का समय लग जाता है और उसके बाद दो घंटे का समय कस्टम में लग जाता है। इस तरह से पांच घंटे का समय चला जाता है। मान लिया कि आप 350 लोगों के लिए सुविधायें दे देंगे, उसके लिए कांस्ट्रक्शन चल रहे हैं लेकिन अगर दो बोइंग आ गए तो आप लोगों को कहां रोक लेंगे? 350 लोग तो एक जम्बो जेट में ही आ जायेंगे और अगर दो तीन जम्बो-जेट आ गए एक साथ तो उनके लिए जगह नहीं होगी। मेरा ख्याल है एक जगह आपने ट्राली के सम्बन्ध में कहा है कि स्पेस की कमी है लेकिन आपने कोई कांस्ट्रक्टिव बात तो कही नहीं, कोई आल्टर्नेटिव या विकल्प नहीं दिया है कि इस तरह से इस को रिमोव कर रहे हैं। मेरा कहने का मतलब यह है कि मन्त्री जी इसपर भी ध्यान दें। आपने इसमें दो चरणों की बात कही है कि

[श्री राजेश कुमार सिंह]

दिसम्बर, 1980 के बीच में यह काम पूरा हो जाएगा लेकिन उसमें कितनी फैसिलिटीज देंगे, कितने लोगों को सुविधायें मिल जायेंगी ? मान लीजिए पसेंजर्स ज्यादा आ जायें तो क्या होगा इस देश के चारों इन्टरनेशनल एयरपोर्ट्स पर दस मिलियन पसेंजर्स सालाना आते हैं जिसमें दिल्ली में सबसे ज्यादा आते हैं। कलकत्ता एअरपोर्ट जो है वहां आप मेजर एयरलाइन्स को बाई पास करने लग गए हैं, कहीं यही हालत दिल्ली की भी न हो जाए? इसलिए अगले पांच सालों में आप कांस्ट्रक्टिव काम करवायें जिससे कि इन्टरनेशनल यात्री जो आ रहे हैं उनको सुविधायें मिल सकें। आगरा जो कि यहां से बहुत नजदीक है उसकी ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा । वहां पर बाहर के टूरिस्ट आते हैं। आपने वहां पर आर्मी से एअर स्ट्रिप ले रखी है जिसपर जहाज उतारे जाते हैं लेकिन वहां पर सामान ले जाने वाला भी कोई नहीं होता है । आज दिल्ली पर जो वजन पड़ रहा है आगरा में इन्टरनेशनल एअरपोर्ट बनाकर–उसको आप तक्सीम करने की कोशिश करें । साथ ही आप ट्राली को ले आवें और कस्टम की ऐसी सुविधायें प्रदान करें जिससे कि पसेंजर्स जल्दी से जल्दी निकल जायें । अन्य देशों में इतना समय नहीं लगता है । तो मंत्री जी इन मुद्दों के बारे में बतायें कि कोई कांस्ट्रक्टिव योजना बनाई है? यदि हां, तो क्या बनाई है?

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा: उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं माननीय सदस्य से यह कहना चाहता हूं कि यह सवाल बहुत बड़ा जो उठा वह क्यों उठा ? इस लिए उठा कि लंडन टेलीग्राफ में कुछ इस तरह की खबर छपी थी और उसको करीब-करीब रिप्रोड्यूस किया गया हमारे यहां एक पेपर में जिसकी वजह से यह बात सामने आई कि दिल्ली के एअरपोर्ट को फारेन एअरलाइन्स बायकाट कर रही है। लेकिन मेरे पास रिकार्ड है, अभी विन्टर शेड्यूल के लिए, खास तौर से 16 फारेन एअरलाइन्स हैं जोकि लैण्डिंग फैसिलिटी के लिए शेड्यूल फाइल करती हैं, उन 16 में एक की भी कमी नहीं हुई है, उन्होंने अपनी शड्यूल फाइल की है । हमारे भाई साहब ने किसी इन्टरनेशनल डायरेक्टर को कोट किया कि दिल्ली का एअरपोर्ट बहुत खराब है लेकिन बाहर वाले तो हमें अच्छा नहीं कहेंगे, बाहर वाले तो खराब ही कहेंगे लेकिन उसकी बिना पर हमारे अखबार भी उस बात को छाप दें, यह कहां तक उचित है यह हमारे लिये सोचने की बात है । **(व्यवधान)** मैं वाजपेयी जी से गौर करने के लिए कह रहा था कि विदेशों के लोग हमारी तारीफ नहीं करेंगे, वे तो शिकायत ही करेंगे कोई छोटी सी भी गल्ती होती है उसको बहुत बड़ा बनाकर लोगों में फैलाने की कोशिश करते हैं **(व्यवधान)** मैंने स्टेटमेन्ट में कबूल किया है कि इस वक्त हमारा एक्सपैंशन का काम चल रहा है और एक्सपैंशन आज की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए है । और अधिक सुविधायें देने के लिए एक्सपैंशन हो रहा है। मैं माननीय सदस्य का ध्यान खासतौर पर इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि यह एक्सपैंशन इसलिए हो रहा है कि जब तक एक नया इन्टरनेशनल एयरपोर्ट नहीं बन जाता है, 1985 तक हम पूरा नहीं कर सकते हैं, इसमें वक्त लगेगा तब तक के लिए इन सुविधाओं का हमने जिक्र किया है कि 350 आदमियों की वहां पर सुविधा है, उसको बढ़ाकर के 525 के लिए कर रहे हैं और इस तरह की जो दिक्कतें हैं. . .

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली): नया एयरपोर्ट कहां बन रहा है ?

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा : दिल्ली में । आप पहले उसका डिजाइन देख लीजिएगा । उसी के पास में बन रहा है और बहुत बड़े पैमाने पर बन रहा है...(**व्यवधान**)... स्वामी जी, किसने बनाया और किसने नहीं बनाया, यह तो हमको पता नहीं है । हम तो उसको पूरा कर रहे हैं और दूसरा नया एयरपोर्ट बनाने जा रहे हैं ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: He is not a swamiji; he is Subramaniam Swamy. Swamiji is different.

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी (बम्बई उत्तर-पूर्व): आज कल तो आपकी सरकार में स्वामियों की बहुत मांग है ।

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा: मैं आपको यह भी इत्तला देने के लिए कहना चाहता हूं कि वहां पर ट्रालीज के लिए इन्तजाम हो रहा है । मैं यह भी मानता हूं कि वहां पर जितनी सुविधायें उपलब्ध होनी चाहिएं, वे सारी नहीं हैं । लेकिन ज्यों-ज्यों सुविधाओं की आवश्यक्ता होती है, हम उसको बढ़ा रहे हैं । मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि इस बात का बराबर ख्याल रखा जाता है और रखा जाएगा कि जो हमारे यूजर्स हैं, जो विदेशी हमारे देश में आते हैं, वे यहां से एक ऐसा इम्प्रैशन लेकर जायें कि हम उनका स्वागत करने के लिए हैं, उनको किसी तरह की असुविधा पहुंचाने के लिए नहीं हैं ।

श्री भीकू राम जैन (चांदनी चौक): उपाध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय की सारी बातें बड़े गौर से सुन रहा था । उनका यह ब्यान की जो अतिथिगण भारतवर्ष में आए, उनको कितनी सुविधायें मिलें, उस चीज का ध्यान बहुत महत्वपूर्ण तरीके से हमारे मिनिस्टर साहब और मिनिस्ट्री कर रही है। हमारे सदन के बहुत सारे माननीय मित्र विदेशों में गए हैं और उन्होंने वहां की एयरपोर्ट को देखा है । अगर हमारा संतोष इस बात में है कि मिनिस्टर महोदय का जो ब्यान कि चार बैल्ट के बजाए दो बैल्ट चल रही हैं, ट्रालीज जरा कमजोर चल रही हैं, रास्ता नहीं है, वे ठीक हो जायेंगी और हम उससे संतुष्ट हो जायेंगे, तो मुझे हंसने के अतिरिक्त और कोई बात समझ में नहीं आती है ।

मेरा विचार है कि आज जो सवाल किया गया है, वह दिल्ली एयरपोर्ट पर सुविधायें नहीं हैं, उस विषय पर सवाल किया गया है । यदि हम लोग इस बात से संतुष्ट हैं कि भारत की राजधानी दिल्ली में, दिल्ली एयरपोर्ट को जितना खूबसूरत होना चाहिए और जितना बड़ा होना चाहिए, वह है, तो मुझे कुछ नहीं कहना है, परन्तु विलायती अखबार में जो ब्यान छपा है और जिसके विषय में मंत्री महोदय का विचार है कि यह चीज उस दृष्टि से उठाई गई है तो मैं उनका ध्यान इस बात पर आकर्षित करना चाहता हूं कि उस ब्यान पर अखबारों के अन्दर पत्र लिखे गए हैं । आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए हमारे मुताल्लिक दूसरे देश में ऐसी विचारधारा है । यह बात इतनी काफी नहीं है कि अगर किसी ने यह लिख दिया है कि यहां विदेशी हवाई कम्पनी अपना जहाज उतारने के लिए आईन्दा बाध्य है, उससे हमको नोट लेना चाहिए ।

उपाध्यक्ष महोदय, असल बात यह है कि तकरीबन साल डेढ़ साल पहले भी यह बात पैदा हुई थी । और उस वक्त विदेशी कम्पनियों ने इस बात का संकेत दिया था कि वी शैल स्कीप दिल्ली ।

दिल्ली में सुविधायें नहीं मिलती और जहां सिर्फ ट्राली नहीं है और पांच-पांच-छः छः घण्टे तक 10-10 और 15-15 आदमियों को इमिग्रेशन और हैल्थ के अन्दर लगते हैं मुझे भी बाहर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और सदस्यों को भी मौका मिला होगा । चूंकि 10-10 और 12-12 घंटे एक-एक जगह पर फार्नर्स को लगते हैं, तो उसके लिए यह समझा जाता है कि हमारे अन्दर टूरिज्म

[श्री भीकू राम जैन]

नहीं है। बदकिस्मती की बात यह है कि मिनिस्टर टूरिज्म और एविएशन एक है। टूरिज्म के दृष्टिकोण से हमको इस बात को ध्यान में रखना है। अगर हमको टूरिस्ट्स को इन्वाइट करना है, तो सबसे पहले इम्प्रेशन उनका होगा, जो कि भारत जैसे देश में उतर कर यह गर्व महसूस करें कि वह ठीक जगह पर उतरे हैं। मेरी आपसे एक यह भी प्रार्थना है कि इसके अतिरिक्त 1973 में एक यहां पर बोइंग एक्सीडेंट हुआ था। उस समय हमारे उस वक्त के स्टील मंत्री—श्री मोहनकुमार मंगलम—का स्वर्गवास हो गया था। उस के बाद जो रिपोर्ट सामने आई उस से मालूम हुआ कि हमारे जो इंस्टालमेन्ट्स हैं, जिन्हें वी. ओ. ए. कहते हैं, इस काबिल नहीं हैं कि बड़े हवाई जहाजों को रास्ता बता सकें, खास तौर से बैड-वैदर में वे डायरेक्शन देने लायक नहीं हैं। उस के बाद इन इंस्ट्रूमेन्टस को लाने के लिये 4 करोड़ रुपया सेंक्शन हुआ था, लेकिन मालूम होता है कि वह अभी तक "रेड-टेप" में पड़ा हुआ है, शायद वे इक्विपमेन्ट्स अभी तक नहीं आये हैं। अगर आ गये हों, तो बहुत खुशी की बात है, लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है वे इक्विपमेन्ट्स अभी तक नहीं लगाये गये हैं। अगर हमारे एयरपोर्ट की यह हालत है कि हम बड़े हवाई जहाजों को डायरेक्शन नहीं दे सकते, तो यह बड़े अफसोस की बात है। हमारी अपनी जो एयर-लाइन्ज हैं, जैसे इण्डियन एयरलाइन्ज और एयर-इण्डिया, अब उनके पास भी बड़े-बड़े हवाई जहाज आ गये हैं। एयर-बसेज भी हैं, 747 जहाज भी हैं और भविष्य में उन की तादाद शायद 11 होने वाली है। यदि हम इन तमाम बातों की सुविधा नहीं दे सके तो आगे जो एयर ट्रैफिक बढ़ रहा है और बढ़ने वाला है उस का मुकाबला हम कैसे करेंगे? यह सोचने की बात है कि क्या ऐसा कर के हम ठीक काम कर रहे हैं।

आप ने कहा है कि आप 64 करोड़ रुपया खर्च कर रहे हैं। मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप एक नया इन्टरनेशनल एयरपोर्ट बनाने जा रहे हैं जो 1985 तक बन जायगा, लेकिन हमारे यहां जिस तरह से फाइल्ज चलती हैं . . .

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Bhiku Ram Jain, put your question.

SHRI BHIKU RAM JAIN: Sir, nobody else put a question. I am of the ruling party. You mean, I should only put a question? I don't have the right to speak?

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have got the right to speak, by putting question.

SHRI BHIKU RAM JAIN: I want to know from the Minister whether he is aware of all these things, and whether he is going to take interest in the matter of developing the Delhi Airport to bring it in line with the other international airports in the world, or whether he has got any budget to be put forth before the Ministry of Finance or whatever it may be?

एक माननीय सदस्य: आप हिन्दी से अंग्रेजी में बोलने लगे।

श्री भीकू राम जैन: उपाध्यक्ष महोदय, जब मंत्री महोदय ने यह कहा कि वे एक बहुत बड़ा एअरपोर्ट बना रहे हैं, तो उस बहुत बड़े एअरपोर्ट की परिभाषा को दृष्टि में रख कर मैं यह जानना चाहता हूं कि कहीं उस बहुत बड़े एअरपोर्ट के मायने यह नहीं हों, जैसे एक जगह नोट में लिखा गया है कि हम 3.3 मिलियन पैसेन्जर्स को एक्सेप्ट करेंगे, जिस का मतलब है 10 हजार पैसेन्जर्स रोज आयेंगे, लेकिन हम बात कर रहे हैं 500 पैसेन्जर्स की, "बहुत बड़े" शब्द को दृष्टि में रख कर 500 की जगह 700 का इन्तजाम कर लेंगे, क्या इस से समस्या का समाधान हो जाएगा? इस के अलावा जो दूसरी सुविधायें पैसेन्जर्स को देनी होती हैं—बहुत सी जगहों पर तो उन को पैदल भी नहीं चलना पड़ता है—उन के लिये आप क्या कर रहे हैं? हीथरो जो लन्दन का एयरपोर्ट है, मंत्री महोदय ने उसे देखा होगा वहां ऐसी व्यवस्था है कि अगर मौसम खराब हो जाता है या बारिश हो रही होती है तो जहाज अन्दर चले जाते हैं. . . .

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी: उन को स्लीव्ज कहते हैं।

श्री भीकूराम जैन: मुझे बम्बई के एअरपोर्ट को खास देखने का मौका नहीं मिला है, इस वक्त मैं दिल्ली की बात कर रहा हूं लेकिन विदेशों के एयरपोर्ट्स को मैंने देखा है। इस लिये मैं बम्बई के बजाय अन्य जगहों के उदाहरण दे रहा हूं और खास तौर से उन जगहों के बारे में जहां मंत्री महोदय भी हो कर आये हैं ।

मंत्री महोदय आज इस बात का आश्वासन दें—वे चाहे फ्रेंकफर्ट, हीथरो या न्यूयार्क जैसा न बनायें, लेकिन कम से कम दिल्ली के नाम के लायक जरूर बनायें । आप चाहे उस पर टिकट लगा दें, 2 रु., 4 रु. या 5 रु., लेकिन वह एक मौनुमैन्ट होनी चाहिये।

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा: मैं माननीय सदस्य से निवेदन करना चाहता हूं कि आज दिल्ली एयरपोर्ट पर जो सुविधायें हम उपलब्ध करा रहे हैं, उन से मैं यदि सन्तुष्ट होता तो नया एअरपोर्ट बनाने का कदम क्यों उठाता । हम 64 करोड़ रुपया खर्च करने जा रहे हैं, बहुत बड़ा एयरपोर्ट बनाने जा रहे हैं। मैं आप को इन्वाइट करूंगा—कम से कम आप उस डिजाइन को देखें जो हम ने बनाया है। उस से आप को पता चल जायगा—मैं हीथरों की बात तो नहीं कर सकता, लेकिन फ्रेंकफर्ट और जो दूसरे इन्टरनेशनल एयपोर्ट हैं उन के मुकाबले आप का एयरपोर्ट या किसी, सुविधा के मुकाबले आप का एयरपोर्ट कम नहीं रहेगा . . .

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी : फ्रेंकफर्ट नहीं देखा है तो क्या आप दिखलायेंगे ?

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा: यह फ्रेंकफर्ट दिखला देंगे।

मैं यही निवेदन करना चाहता हूं—यदि हम सन्तुष्ट होते कि हमारे पास जो सुविधायें हैं वे काफी हैं तो हम यह कदम न उठाते।

उपाध्यक्ष महोदय, वर्तमान में जो सुविधाएं हमारे पास हैं, उन के सम्बन्ध में माननीय सदस्य ने कहा। तो मैं आप से यह कहना चाहता हूं कि हमारे यहां जो लाइनिंग फैसेलिटी है, हमारा जो रन-वे है और हमारा जो एअरपोर्ट है, उन में जो कुछ भी हमारे यहां सुविधाएं हैं जैसे एयर रूट सर्वीलेंस रेडार है, एयरपोर्ट सर्वीलेंस रेडार है या फिर प्रीसिजन एप्रोच रेडार है और इन्स्ट्रूमेंट लेंडिंग का जो काम है . . .

डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी: आई. एल. एस. टी. काम नहीं कर रहा है।

श्री अनन्त प्रसाद शर्मा: आप की तरह के लोग ही बाहर जा कर हमारे खिलाफ प्रोपेगेन्डा करते हैं। तो मैं यह कह रहा था कि ये सारी जो इन्टरनेशनल स्टैन्डर्ड की सुविधाएं हो सकती हैं, वे सब दिल्ली के एयरपोर्ट में मौजूद हैं। आप चाहे तो जाकर देख भी सकते हैं ।

आखीर में मैं एक ही बात कहना चाहता हूं। सवाल तो हमारे सामने यह है कि क्या किसी इन्टरनेशनल एअरलाइन ने हम को थ्रेट किया है कि हम दिल्ली नहीं आयेंगे किसी कारण हो। यह मुख्य प्रश्न है। मैं यह कह सकता हूं कि यह एक प्रोपेगेन्डा है। मैंने अभी बतलाया था कि अभी हाल में विन्टर सीजन के लिए उन्होंने एक शेड्यूल पेश किया है, 16 फौरेन एयरलाइन्स दिल्ली में आती हैं और सब ने हमारे पास अपना एक शेड्यूल फाइल किया है । इसलिए किसी न किसी तरह का कोई थ्रेट नहीं दिया है और मैं तो यह कह सकता हूं और दावे के साथ कहता हूं कि पिछले दिनों में भी किसी ने कोई थ्रेट नहीं दिया है।

BUSINESS OF THE HOUSE

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BHISHMA NARIAN SINGH): With your permission, Sir, I rise to announce that Government Business in this House during